<u>अन्दर-अन्दर</u>

कुछ छुट रहा है अन्दर-अन्दर,

कुछ टूट रहा है अन्दर-अन्दर |

एक नया-नया था ख्वाब मेरा,

जो टूट रहा है मन के अन्दर |

सोयी थी जिस सपने में मैं,

वो सपना बिखरा अन्दर-अन्दर |

काश उसे मैं रोक सकती,

दफ़न हुआ जो सीने के अन्दर |

दुनिया से परे आशियाना मेरा,

सजाया जिसे फूलों के अन्दर,

फूल वो सारे मुरझाये हैं,

सूख चुके कुछ अन्दर-अन्दर |

कभी तो हो सच सपने सारे,

कभी तो हो कोई अपने प्यारे |

जिसको मैंने मान लिया था,

वो अपने छूटे अन्दर-अन्दर |

..... चेतना टाढा